आभारोक्ति

''एक विलक्षण चरित्र नारद– पुराणों के विशेष सन्दर्भ में'' शोध–प्रबन्ध में मैं अपने निर्देशक डॉ. हरिश्चन्द्र मिश्र (अवकाश प्राप्त अध्यक्ष/एसो.प्रो. संस्कृत विभाग, का.सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या) के योगदान एवं अनुभवगम्य निर्देशन के लिए धन्यवाद देती हूँ एवं हृदय से आपके प्रति आभार प्रकट करती हूँ। आपने हमें एक नया जीवन प्रदान किया, मेरे जीवन को एक दिशा और दशा प्रदान किया। आपके अथक् प्रयासों के परिणामस्वरूप यह शोधकार्य सम्पन्न हो सका। अतः मैं अपने शोधकार्य का सम्पूर्ण श्रेय अपनी प्रणतिपूर्ण कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उन्हें गुरुदक्षिणा स्वरूप अर्पित करती हूँ। साथ ही साथ स्नेहमयी एवं ममतामयी गुरुमाता श्रीमती शकुन्तला देवी को भी सहृदय धन्यवाद एवं कृतज्ञता अर्पित करती हूँ जो गुरु जी की व्यस्ततम क्षणों में भी मेरे लिए समय देने का हठ किया करती थीं।

मेरे देवतुल्य मामाजी (मामा श्वसुर) श्री स्वामीनाथ शुक्ल जिनकी मैं वास्तविक ऋणी हूँ जिन्होंने मेरे लिए (स्वास्थ्य ठीक न होने के बाद भी) अनेक कष्टों को झेलते हुए मेरे शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए समय एवं आर्थिक सहयोग प्रदान किया। इन्हीं की वजह से ही यह शोध–प्रबन्ध रूपी वटवृक्ष तैयार हुआ।

मेरे पूज्यनीय पतिदेव श्री अरविन्द मिश्र जी जिनकी मैं आजीवन ऋणी रहूँगी जिन्होंने शोधकार्य पूर्ण करने में पग–पग पर मेरा साथ दिया और प्रेरित करते रहे, मेरे साथ–साथ रात–रात भर जागकर मेरा शोध कार्य पूर्ण कराने में मेरा साथ दिया।

आदरणीय डॉ. मनोकानिका दूबे जी (प्रधानाचार्य, शोहरतगढ़ इण्टर कॉलेज, सिद्धार्थनगर) की भी ऋणी हूँ जिन्होंने अपने अमूल्य समय को प्रदान कर अपने श्लाघनीय साहित्यिक ज्ञान से इस शोध को पूर्ण कराने में सहयोग प्रदान कया। साथ ही साथ मैं अपनी पुत्री प्रज्ञा को भी सहृदय आभार व्यक्त करना चाहूँगी क्योंकि जब–जब मैं शोधकार्य को लिखने–पढ़ने के कारण थक जाती थी वह अपनी मीठी एवं प्यारी–प्यारी बातों से मेरे मन को प्रसन्न कर देती थी। इसके अलावा मैं अपनी बड़ी पुत्री योग्या को भी आभार व्यक्त करना चाहूँगी जो मुझे शोध प्रबन्ध के कार्य में थके होने पर यथायोग्य गृह कार्य में मेरा सहयोग करती और अपने नन्हें हाथों से कभी मेरे सिर को दबाते हुए यह कहती आप चिन्ता न करें। मैं हूँ न आपके साथ,

इस तरह यह मेरी दोनों बेटियाँ मुझे ऊर्जावान् बनाती रहती थीं।

मैं अपने भाई श्री राजेश शुक्ल (Net Ambit Pvt. Ltd. Training Pan India, Delhi) की भी आभारी हूँ जो अपने भागमभाग जीवन के कुछ क्षणों को मुझे प्रदान किया तथा हर दूसरे दिन फोन करके इन चार वर्षों में निरन्तर मुझे प्रेरित करते रहे और मैं अपनी सहयोगी सीमा की भी आभारी हूँ जिन्होंने शोध प्रबन्ध को अन्तिम रूप में पहुँचाने में मेरी सहायता की।

अन्ततः मैं उन सभी विद्वानों की ऋणी हूँ जिनके ग्रन्थों का अध्ययन कर अथवा जिनका मार्गदर्शन पाकर मैं इस शोध जैसे गुरुतर कार्य को को सम्पन्न कर सकी जिनकी रचनाओं से मैं लाभान्वित हुई हूँ और जिनकी शुभकामनाओं से मेरा शोधकार्य सम्पादित हो सका। मैं उन सभी पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों जिनकी कृतियों एवं विचारों से यथास्थान मैं शोधकार्य हेतु सहायता ली है उन सबके प्रति मैं आभार प्रदर्शित करती हूँ।

अन्त मैं अपने परिवार के सभी सदस्यों, सहयोगियों का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे शोधकार्य के लिए प्रेरित किया।

गुड्डी मिश्रा

स्थान : .....अयोध्या.....

दिनांक : 12/04/2014

(गुड्डी मिश्रा)

शोधच्छात्रा